157

गुलशन नामा

न शहंशाह न हाक़िम न नवाब हूँ मैं
सिर्फ वफ़ा की बन्द किताब हूँ मैं।
जो अब तक पड़ा था किसी गली-कूचे में,
शुक्रगुजार उठा के पढ़ने वालों का जनाब हूँ मैं

डा० अशोक 'गुलशन'